Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.280, Volume 12, No. 01, January-March 2022, pp. 192-194

# आधी आबादी महामारी से हारी : एक विश्लेषण

डॉ. निधि यादव*

***सार***

*कोरोना महामारी का असर परिवार और रोजगार पर सीधा परिलक्षित हुआ है। भारत में नौकरी पर बने रहना महिलाओं के लिए पहले से ही चुनौतीपूर्ण रहा है और कोरोना ने इस संकट को और भी गहराया है। इस आपदा ने उनकी नौकरी को ज्यादा असुरक्षित बना दिया है 'वर्क फ्रॉम होम' और 'स्टडी फ्रॉम होम' के नवीन आयाम ने उनकी शारीरिक थकान और मानसिक अवसाद में इज़ाफा किया है। एक समतामूलक लैंगिक विभेद मुक्त समाज के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी आधी आबादी को स्वस्थ व स्नेहिल वातावरण उपलब्ध कराए जिससे वह इस चुनौतीपूर्ण समय में अपने शारीरिक और मानसिक क्षमता का पूर्ण आत्मविश्वास के साथ संवृद्धन कर सकें।*

***शब्द कुंजी :*** *कोविड, आधी आबादी, रोजगार, लैंगिक असमानता, आर्थिक सशक्तिकरण।*

---

**प्रस्तावना**

नारी की महिमा अपरंपार है। उसके अनेक रूप हैं। वह जन्म देती है और जीवन भी, उसकी सहभागिता के बिना इस सृष्टि का बचे रहना भी संभव नहीं है वह ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है। अपने हर रूप, हर भाव में सृजन, चेतना और शांति की प्रतीक है। स्त्री संवेदना का विस्तार अनंत है उसे नापना या तोड़ना संभव नहीं है। कोविड 19 के दौर में इन्हीं स्त्रियों पर घर की जिम्मेदारियों और ऑफिस के काम का बोझ वैश्विक स्तर पर अनेक सर्वेक्षणों में परिलक्षित हो रहा है।

महामारी (कोरोनाकाल) ने परिवार के सदस्यों को एक छत के नीचे रहने का अवसर दिया है जिससे महिलाओं का जीवन नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ है। घरेलु महिला के काम का न तो समय निश्चित है, न ही उसके कार्य को श्रम की श्रेणी में स्वीकार किया गया है। भारतीय समाज का परिवेश व मानसिकता ऐसी है कि एक महिला, चाहे वह घरेलु महिला हो या कामकाजी, उसे घर का काम तो करना ही पड़ता है। कोरोना में 'वर्क फ्रोम होम' और 'स्टडी फ्रोम होम' ने महिलाओं पर ज्यादा दबाव डाल दिया है इससे उनके काम बढ़ गया है जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक समस्या भी बढ़ गई है।

हमारे सामाजिक ताने–बाने के चलते समाज एक महिला से यह उम्मीद करता है कि घरेलू जिम्मेदारियों का समस्त बोझ महिलाओं पर ही है। घर की बुजुर्ग महिलाएं भी घर–परिवार में पुरूष को सहयोग करते हुए देखना पसंद नहीं करती है ऐसे में महामारी काल में महिलाऐं सुबह से रात तक घरेलू कार्य में व्यस्त नजर आ रही है।

कामकाजी महिलाएं घरेलु कार्यों के साथ–साथ 'वर्क फ्रॉम होम' में भी व्यस्त है, तो साथ में बच्चों की 'स्टडी फ्रॉम होम' की जिम्मेदारी भी उन पर है। महामारी ने संपूर्ण विश्व की महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया है। सबसे ज्यादा नुकसान नौकरी पेशा महिलाओं को हुआ है। महामारी के कारण पिछले एक वर्ष में 6.4 करोड़ महिलाओं को नौकरी गंवानी पड़ी, यानी हर 20 कामकाजी महिलाओं में से 1 को। यह खुलासा बिल एंड

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

मेलिंडा फाउंडेशन की हाल ही में जारी रिपोर्ट में हुआ है। इसमें कहा गया है कि महिलाओं पर ज्यादा असर इसलिए पड़ा, क्योंकि सबसे ज्यादा नुकसान महिला कर्मचारियों की अधिकता वाले रिटेल, मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर जैसे क्षेत्र जिनमें 40: कर्मचारी महिलाएं हैं, लॉकडाउन के कारण बंद रहे।

रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं के रोजगार को लेकर एक जैसा पैटर्न देखा गया है। लगभग हर देश में महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में ज्यादा नौकरी खोई है। ऐसे शीर्ष देशों में अमेरिका, कनाडा, स्पेन और ब्राजील जैसे विकसित देश भी है।[1]

कोरोना संकट ने दुनिया भर की महिलाओं को प्रभावित किया है अमेरिका में जनवरी 2021 तक के आंकड़े चिंताजनक है। 2020 में अमेरिका में 13 साल से कम उम्र के बच्चों की 15 लाख माताओं (करीब 8 फीसदी) को कामकाज छोड़ना पड़ा जबकि सामान्य कामकाजी महिलाओं के मामले में यह आंकड़ा 5.3 फीसदी है।[2]

वैश्विक स्तर पर 23: और भारत में 26: नौकरी पेशा महिलाएं अपना रोजगार छोड़ने का विचार बना रही है इसका इसका खुलासा हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय फर्म 'डेलायट' द्वारा 10 देशों की 5,000 महिलाओं का अध्ययन करके किया गया। सर्वे में शामिल आधे से ज्यादा महिलाओं का मानना है कि कोरोना महामारी के चलते कैरियर से लेकर घरेलु कामकाज में उन पर काम का दबाव बढ़ा है। अब वे कैरियर को लेकर कम उत्साहित महसूस करती हैं उनकी दिनचर्या पूरी तरह बदल गई है स्कूल बंद होने के कारण उन पर घर परिवार और बच्चों की देखभाल का दबाव भी बड़ा है।[3]

## महिलाओं के हिस्से कर्तव्य ही क्यों?

अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मुश्किल यह है कि जब हम वास्तविक सामाजिक धरातल की बात करते हैं तो पुरुष समाज बहुत से अधिकारों को अपनी बपौती समझते हैं, तो महिलाओं के हिस्से में कर्तव्य ज्यादा आते हैं। कोविड 19 महामारी के दौरान विषम परिस्थिति में भी पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की जिम्मेदारियाँ और आर्थिक कठिनाइयां बड़ी है।

अगर हम आंकड़ों की बात करें तो मार्च 2020 में देश में सख्त लॉकडाउन के दौरान 12 करोड़ लोगों की आजीविका चली गई थी उनमें से अधिकतर ऐसे थे जो अनौपचारिक क्षेत्र में थे और इसमें महिलाओं का प्रतिशत लगभग आधा था।[4] मैकंजी ग्लोबल इंस्टीट्यूट भी एक रिपोर्ट के अनुसार लैंगिक असमानता के कारण इस महामारी का प्रभाव समाज के अति संवेदनशील और असुरक्षित तबके यानि महिलाओं पर पड़ा है।[5] भारत और अमेरिका में किए गए एक सर्वेक्षण से यह तथ्य सही पाया गया संपूर्ण विश्व में कामकाजी महिलाओं ने वर्क फ्रॉम होम के साथ–साथ घरेलू कार्यो सफाई कार्यों और बीमारों की सेवा इत्यादि भी खुद किया।

ग्लोबल जेंडर गैप 2020 की रिपोर्ट के अनुसार महामारी के कारण पैदा हुई आर्थिक असमानता की खाई को भरने में 257 वर्ष लगेंगे। आपदा किसी भी रुप में आए, उसका सर्वाधिक प्रभाव महिलाओं पर ही पड़ता है उनकी आवश्यकताओं से लेकर स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक स्थिति तक प्रभावित होती है, विशेषतया उनकी आर्थिक आत्म निर्भरता देखभाल की सीमाओं से परे यह विश्वास अभी भी जड़े जमाए बैठा है कि महिलाओं का मूल कार्य घरेलू कार्यों का निर्वहन ही है यह स्थिति स्त्रियों के मानसिक और शारीरिक शोषण की सदियों से चली आ रही दास्तां बयां करती है। दुर्भाग्य यह है कि अधिकांशत यह शोषण रिश्ते और परिवार के नाम पर ही होता है, जो आपदा में खत्म होने की बजाय बढ़ गया है। दुनिया भर में घरेलू हिंसा बढ़ने की खबरें आई। भारत में यह स्थिति अपने चरम पर थी। असंगठित क्षेत्रों, घर, कारखानों में काम करने वाली कामगार औरतें बेरोजगार हुई हैं। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण परिवार में उनकी स्थिति विकट हुई है, परिवार में होने वाले शक्ति संतुलन में उनकी स्थिति सबसे निचले दर्जे में पहले से ही थी, काम के घटते अवसरों ने उनकी स्थिति बदतर कर दी है। बढ़ती बेरोजगारी अवसाद, भविष्य की चिंता के बीच शराब के ठेके खोल दिए जाने का सबसे हानिकारक प्रभाव महिलाओं पर ही परिलक्षित हुआ है।

महामारी के इस दौर में महिलाओं के लिए विशेष रोजगार के अवसरों का सृजन, असंगठित कामगार महिलाओं के लिए ठोस योजनाएं, घरेलू हिंसा को रोकने के लिए प्रभावी उपाय, स्त्री स्वास्थ्य संबंधी विशेष प्रबंध किए बिना 'महिला सबलीकरण' और 'बेटी बचाओ' का नारा अधूरा ही रह जाएगा।

संपूर्ण विश्व की महिलाएं अपनी सामाजिक आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता में जिस रास्ते पर एक लंबे संघर्ष के बाद पहुंच चुकी है वे इतनी आसानी से पुनः शोषण के अंधेरो में गुम नहीं होनी चाहिए।

**उम्मीद की किरण**

लैंगिक समानता की पक्षधर स्वर्णा राजगोपालन मानती है कि आने वाला समय महिलाओं के लिए काफी मुश्किल हो सकता है, लेकिन उम्मीद अभी भी बाकी है क्योंकि जो महिला समाज, एक बार इतने लंबे संघर्ष के बाद सामाजिक बेड़ियों से आजाद हुआ है वे महामारी के पश्चात भी आसानी से हार नहीं मानेगा।

महिलाएं अपने काम के प्रति बहुत गंभीर होती है, वे निर्णय लेने में तत्पर होती है उनके फैसले ज्यादा व्यापक और दूरगामी सोच लिए होते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इस अनिश्चितता के दौर में उनके भीतर के असुरक्षा के भाव को कम करने का समेकित प्रयास किया जाए।

कार्यस्थल पर उन्हें एक बेहतर माहौल देने की कोशिश की जाए।

देश में घरेलू हिंसा के बढ़ते मामलों पर रोकथाम के लिए आने वाले समय में समाधान के प्रयास हो।

उचित मजदूरी और रोजगार भी बेहतर शर्तें सुनिश्चित की जाए।

महिलाओं को फिर से श्रम जनबल से जोड़ने और उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए उनकी 'डिजिटल साक्षरता' में सुधार भी अपेक्षित है।

कोविड महामारी के चुनौतीपूर्ण समय में महिला वर्ग के लिए एक स्नेहिल वातावरण का निर्माण करना हेागा जो उनमें बराबरी का माहौल और सम्मान देगा जिससे उनमें असुरक्षा का भाव कम होगा, आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी जो कार्यस्थल से लेकर परिवार के भीतर भी दिखाई देगी। एक समतामूलक और लैंगिक विभेद मुक्त समाज निर्माण के लिए आवश्यक है कि महिलाओं के प्रति पितृसत्तात्मक समाज की दकियानुसी सोच को बदला जाए ....

''जब है नारी शक्ति सारी, तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी''

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. दैनिक भास्कर अजमेर संस्करण 5 मई 2021 पृष्ठ 09
2. दैनिक भास्कर अजमेर संस्करण 24 मई 2021 प्रश्न 09
3. Deloitte Survey
4. राजस्थान पत्रिका 12 मई 2021 पृ. 9 अजमेर संस्करण
5. मैकंजी ग्लोबल इंस्टिट्यूट रिपोर्ट
6. सेंटर फॉर मॉनिटरिंग द इंडियन इकोनामी सर्वे
7. http://www-bbc-com Hindi
8. https://navbharattimes.Indiatimes.dot.com
9. gender gap report 2020

♦❐♦